जापान
भारती

प्रवेशांक मार्च १९९९

संयोजक

सौरभ सिंघल
रंजन कुमार

पता :

२०८, मैंशन न्यू ताकानावा
२-१०-१५ ताकानावा
मिनातो कू, तोक्यो - १०८

फोन/फैक्स : रंजन - ०३-३४७३-६०४३
फोन : सौरभ - ०३-३४६२-०८५३
ई-मेल : ranjan@twics.com

इस अंक में
*
हमारा पन्ना
होली है
বঙ্গাব্দের বিভ্রান্তি
संस्मरण
आँखों देखी
बचपन
विविध

मंगलम् भगवान विष्णु, मंगलम् गरुड़ध्वजः
मंगलम् पुण्डरीकाक्षः, मंगलाय तनोहरि

रंग-अबीर भरे होलीमय अभिवादन के साथ जापान भारती का प्रवेशांक आपके हाथ में है । यह एक पत्रिका मात्र नहीं एक प्रयास है परदेस में अपनी जड़ों से जुड़े रहने का । भारतीयता की पहचान बनाए रखने का । जापान के लोगों को भारत से परिचित कराने का । इस प्रयास में हर भारतवासी का योगदान तो परम आवश्यक है ही, हिन्दी और अन्य भारतीय भाषा सेवी जापानवासियों का साथ मिले बिना भी यह महायज्ञ पूर्ण नहीं होगा । भारती में हर भारतीय भाषा के पाठक और लेखक का खुले दिल से स्वागत है । आप सब का सम्पूर्ण सहयोग और आशीर्वाद हमारे साथ है, इसी भरोसे हमने यह विनम्र शुरूआत करने का साहस जुटाया है । अपनी प्रतिक्रिया देकर हमारा साहस बढ़ाएँ । होली की बधाइयाँ !!

जापान भारती

ஜப்பான் பாரதி - இது ஒரு பத்திரிக்கை மட்டுமல்ல ! வேரூன்றிய நம் இந்தியக் கலாச்சாரத்துடன் நம்மை பிணைத்து வைத்திருக்க ஒரு முயற்சியும் கூட ! நம்மை இந்தியராக அடையாளம் காட்டிக் கொள்ளவும், ஜப்பானியர்களுக்கு இந்தியாவை அடையாளம் காட்டவும் கிடைத்திருக்கும் ஒரு சந்தர்ப்பம் ! இந்தப் பெருமுயற்சிக்கு ஜப்பானில் இருக்கும் இந்திய மக்களின் பேரன்பும், ஆதரவும் இன்றியமையாதது என் கருதுகிறோம். இந்திய மொழிகள் அறிந்த ஜப்பானிய மக்களின் ஆதரவையும் வேண்டுகிறோம். உங்களிடமிருந்து இந்தியாவின் பல்வேறு மொழிகளில், படைப்புகளை வரவேற்கிறோம். உங்களின் ஆசிகள் மற ம் நல்வாழத்துக்களுடன் இந்தப் பத்திரிக்கையைத் தொடங்கி, முதல் பதிப்பை உங்கள் பார்வைக்கு சமர்ப்பிக்கிறோம். இந்த முதல் இதழ் பற்றிய உங்களின் கருத்துக்களையும், ஆலோசனைகளையும் தெரிவித்து எங்களை உற்சாகப்படுத்தவும் வேண்டுகிறோம்.

होली, होलिका, वसंतोत्सव, धूलिकावंदन, और फाग भारत के सबसे रंग-बिरंगे त्योहार के नाम ही नहीं देश की रंगारंग विविध संस्कृति की पहचान है । होली के शुभ अवसर पर इसके सांस्कृतिक पक्ष के साथ-साथ महाराष्ट्र और हरियाणा ही नहीं चीन की भी भीगती-भिगोती होली की रस-भरी फुहार :

सांस्कृतिक एकता का पर्व

भारतवर्ष के चार प्रमुख त्यौहारों में से एक होली शिशिर ऋतु के अंत की सूचना लाती है और वसंत ऋतु में मनाई जाती है । इसलिए होली का एक प्राचीन नाम है *वसंतोत्सव* । वसंत ऋतु में प्रकृति अपने सुंदरतम रूप में होती है । मौसम सुहावना होता है । खेत फसलों से लहरा उठते हैं । उपवनों में फूल महक उठते हैं । आम के पेड़ों पर बौर आ जाते हैं । कोयल खुशी से गाने लगती है । इस समय न अधिक सर्दी होती है, न गर्मी और न बरसात। इसलिए ऋतु-परिवर्तन और वसंत के स्वागत में लोग रंगो से खेल कर उत्सव मनाते हैं और इसी को *होली* कहते हैं । होली वर्ष के अंतिम मास फागुन के अंतिम दिन खेली जाती है । इसलिए यह वर्ष की समाप्ति और नये वर्ष के आगमन की प्रसन्नता भी सूचित करती है । भारत एक कृषि-प्रधान देश है । इसलिए यहाँ फसल, ऋतुओं और मौसम के आनन्द को मिल-जुल कर मनाने की परम्परा है । इस प्रकार *होली* त्योहार मनाने का एक कारण तो ऋतु-परिवर्तन से ही जुड़ा है ।

होली का धार्मिक महत्व भी कम नहीं है । जिस दिन होली खेली जाती है, उससे पिछले दिन रात को होलिका-दहन किया जाता है। फागुनी पूर्णिमा की शाम को जगह-जगह पर होली जलाते हैं और उसमें माला, गन्ना, नारियल, जौ, अलसी आदि डाल कर उसकी परिक्रमा करते हैं । होली जलने के पीछे एक प्रसिद्ध पौराणिक कथा है । होलिका विष्णुद्रोही राक्षस हिरण्य-कशिपु की बहन थी, जिसे वरदान था कि वह आग में नहीं जलेगी । हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रह्लाद विष्णु का भक्त था । उसने प्रह्लाद को मारने के बड़े उपाय किए, पर वह नहीं मरा । तब उसने होलिका से कहा कि वह बालक प्रह्लाद को गोदी में ले कर आग में बैठ जाए । होलिका ने ऐसा ही किया । पर विष्णु की भक्ति के कारण प्रह्लाद नहीं जला और होलिका जल गयी । तब से ही होली जलाने की प्रथा प्रारम्भ हुई ।

होली पर्व के साथ अनेक सांस्कृतिक परम्पराएँ जुड़ी हुई हैं । दक्षिण भारत में इस दिन फागुनी व्रत किया जाता है, जिसे कल्याणव्रत कहते हैं । यह व्रत भगवान शिव को समर्पित है ।

माना जाता है कि इस दिन भगवान शिव ने तीसरे नेत्र की ज्वाला से कामदेव को भस्म किया था। एक दूसरी कथा के अनुसार इस दिन शिशु कृष्ण भगवान ने पूतना राक्षसी को दूध पीते-पीते ही मार डाला था । होली का जितना सम्बंध कृष्ण से है, उतना किसी भी और देवी-देवता से नहीं । संगीत, नृत्य और दूसरी कलाओं में श्रीकृष्ण और गोपियों के होली खेलने के कई रूप मिलते हैं । फिर वृंदावन और ब्रजभूमि में होली की बात ही कुछ और है । इसकी तैयारी काफी पहले से की जाती है । गाँव-गाँव में होली-गीत और फाग, चौताल की गूँज सुनाई पड़ने